एम.ए. हिन्दी साहित्य

	अंक विभाजन	
	सत्रीय कार्य	वार्षिक परीक्षा
पूर्वार्द्ध		
1. आधुनिक हिन्दी काव्य	20	80
2. गद्य साहित्य	20	80
3. काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन	20	80
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास	20	80
5. जैन संस्कृति एवं जीवन मूल्य	20	80
उत्तरार्द्ध		
6. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	20	80
7. भाषाविज्ञान एवं हिन्दी भाषा	20	80
8. लोकसाहित्य अथवा हिन्दी उपन्यास	20	80
9. पत्रकारिता प्रशिक्षण अथवा अनुवाद विज्ञान	20	80
10. प्रयोजनमूलक हिन्दी	20	80

प्रस्तुत स्नातकोत्तर (एम.ए.) पाठ्यक्रम दो वर्षों का होगा। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध में पाँच–पाँच पत्रों का अध्ययन करना होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का होगा। प्रत्येक प्रश्न–पत्र के 20 अंक सत्रीय कार्य के होंगे। एतदर्थ दो सत्रीय कार्य हल करने होंगे।

स्नातकोत्तर (एम.ए.) पूर्वार्द्ध
प्रथम प्रश्न पत्र–आधुनिक काव्य

पूर्णांक : 100

पाठ्यग्रंथः

1. साकेत – मैथिलीशरण गुप्त (केवल नवम सर्ग)
2. कामायनी – जयशंकर प्रसाद (केवल श्रद्धा, लज्जा एवं इड़ा सर्ग)
3. राम की शक्ति पूजा–निराला
4. कुरूक्षेत्र–रामधारीसिंह दिनकर (केवल तीसरा सर्ग)
5. अज्ञेय–नदी के द्वीप, असाध्य वीणा, सोन मछली, एक बूंद सहसा उछली, षब्द और सत्य
6. ऋषभायण (कोई एक सर्ग)

n|r ikB& रत्नाकर, हरिवंशराय बच्चन, शमशेर बहादुर सिंह, जगदीश गुप्त, कुँवरनारायण, नरेश मेहता

lgk;d iLrd&

1. कामायनी में काव्य, संस्कृति और दर्शन–द्वारकाप्रसाद सक्सेना।
2. नई कविता नए धरातल–हरिचरण शर्मा
3. हिन्दी के प्रतिनिधि आधुनिक कवि– द्वारका प्रसाद सक्सेना।
4. कविता के नए प्रतिमान–नामवर सिंह।
5. अधुनातन कवि–रामप्रसाद मिश्र।
6. युगचरण दिनकर–सावित्री सिन्हा।
7. निराला की काव्य साधना–रामविलास शर्मा।

vad foHkktu&

3	व्याख्याएं	3 x 10 = 30
2	आलोचनात्मक प्रश्न	2 x 15 = 30
5	लघूत्तरी प्रश्न	5 x 4 = 20
20	वस्तुनिष्ठ प्रश्न / अति लघूत्तरी प्रश्न	20 x 1 = 20

द्वितीय प्रश्नपत्र—गद्य साहित्य

पाठ्यग्रंथः

1. गोदान — मुंशी प्रेमचन्द
2. चन्द्रगुप्त — जयशंकर प्रसाद
3. अशाढ़ का एक दिन— मोहन राकेश
4. वाणभट्ट की आत्म कथा—पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी

निबन्ध&

1. बालकृष्ण भट्ट—होली
2. महावीर प्रसाद द्विवेदी—कवि कर्त्तव्य, कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता
3. रामचन्द्रशुक्ल—लज्जा और ग्लानि
4. रामविलास शर्मा—तुलसी के सामन्त विरोधी मूल्य
5. विद्यानिवास मिश्र—हल्दी, दूध, दधि, अच्छत
6. कुवेरनाथराय—निशाता बासुरी
7. आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी—भारतीय साहित्य की एकता

dgkuhdkj&

1. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी—उसने कहा था
2. जयशंकर प्रसाद—पुरस्कार
3. प्रेमचन्द—मंत्र
4. जैनेन्द्र—पाजेब
5. धर्मवीर भारती—गुलकीबन्नो
6. कमलेश्वर—राजा निरवंशिया
7. ऊषा प्रियवंदा— वापसी
8. पथ के साथी— महादेवी वर्मा

nr ikB&

ukVddkj& 1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 2. जगदीशचन्द्र माथुर

miU;kl dkj& 1. जैनेन्द्र 2. अमृतलाल नागर

fucU/kdkj& 1. बालमुकुन्द गुप्ता 2. डॉ. नगेन्द्र

dgkuhdkj& 1. यशपाल 2. फणीश्वरनाथ रेणु

LQVxUFk&
1. कलम का सिपाही— अमृतराय
2. क्या भूंलूँ क्या याद करूँ— हरिबंशराय बच्चन

lgk;d iLrdk&

1. हिन्दी उपन्यास—शिवनारायण श्रीवास्तव।
2. कहानियों की शिल्पविधि का विकास—लक्ष्मीनारायण लाल
3. आज का हिन्दी उपन्यास—इन्द्रनाथ मदान।
4. हिन्दी उपन्यास : उपलब्धियां—लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय।
5. प्रसाद के नाटकों का शासकीय अध्ययन—जगन्नाथ प्रसाद शर्मा।
6. प्रसाद के ऐतिहासिक नाटक

vd foHkktu&

3	व्याख्याएं	3 x 10 = 30
2	आलोचनात्मक प्रश्न	2 x15 = 30
5	लघूत्तरी प्रश्न	5x 4= 20
20	वस्तुनिष्ठ / अति लघूत्तरी प्रश्न	20 x 1= 20

तृतीय प्रश्नपत्र—काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

पाठ्य विवरण

¼d½ lLdr dk0;'kkL=½ काव्य—लक्षण, काव्य—हेतु, काव्य—प्रयोजन, काव्य के प्रकार।

- **रस—सिद्धान्त :** रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति, रस के अंग, साधरणीकरण, सहृदय की अवधारणा।
- **अलंकार—सिद्धान्त :** मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण।
- **रीति—सिद्धान्त :** रीति की अवधारणा, काव्य—गुण, रीति एवं शैली, रीति सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएं।
- **वक्रोक्ति— सिद्धान्त :** वक्रोक्ति की अवधारणा , वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति एवं अभिव्यंजनावाद।
- **ध्वनि—सिद्धान्त :** ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि—सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद, गुणीभूत—व्यंग, चित्र—काव्य।
- **औचित्य—सिद्धान्त :** प्रमुख स्थापनाएं, औचित्य के भेद।

(ख) पाष्चात्य काव्यषास्त्र &

- lyVk ½ काव्य सिद्धान्त ।
- vjLrw ½ अनुकरण–सिद्धान्त, त्रासदी–विवेचन।
- ykSatkbul ½ उदात्त की अवधारणा।
- eSF;w vkuZYM ½ आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य।
- Vh-,l- bfy;V ½ परम्परा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त
- vkbZ-,- fjpM~Zl ½ व्यावहारिक आलोचना।
- fl)kUr vkSj okn ½ स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववाद।
- vk/kqfud leh{kk dh fof'k"V izo`fÙk;k¡ ½ विखंडनवाद, उत्तर–आधुनिकतावाद।

¼x½ fgUnh dfo&vkpk;ksZ dk dkO;'kkL=h; fpUru½

- लक्षण–काव्य–परम्परा एवं कवि–शिक्षा – केशव, चिंतामणि, भिखारीदास

¼?k½ fgUnh vkykspuk dh izeq[k izo`fÙk;k¡½

- शास्त्रीय, तुलनात्मक, प्रभाववादी, सौंदर्यशास्त्रीय और समाजशास्त्रीय

¼M-½ O;kogkfjd leh{kk½

- प्रश्नपत्र में पूछे गए किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा।

vad foHkktu&

संस्कृत काव्यशास्त्र 1 आलोचनात्मक प्रश्न :	1 x 15 = 15
पाश्चात्य काव्यशास्त्र 1 आलोचनात्मक प्रश्न :	1 x 15 = 15
हिन्दी काव्यशास्त्र 1 आलोचनात्मक प्रश्न :	1 x 15 = 15
व्यावहारिक समीक्षा	= 15
5 लघूत्तरी प्रश्न	5 x 4= 20
20 वस्तुनिष्ठ /अति लघूत्तरी प्रश्न	20 x 1= 20

चतुर्थ प्रश्नपत्र–हिन्दी साहित्य का इतिहास

पाठ्यग्रंथः

- इतिहास–दर्शन और साहित्येतिहास।
- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, आधारभूत सामग्री और साहित्येतिहास के पुनर्लेखन की समस्याएं।
- हिन्दी साहित्य का इतिहास : काल–विभाजन, सीमा–निर्धारण और नामकरण।
- हिन्दी साहित्य : आदिकाल की पृष्ठभूमि, सिद्ध और नाथ–साहित्य, रासो– काव्य, जैन–साहित्य।
- हिन्दी साहित्य के आदिकाल का ऐतिहासिक परिदृश्य, प्रवृत्तियाँ, काव्यधाराएँ, गद्य साहित्य, प्रतिनिधि रचनाकार और उनकी रचनाएँ।
- पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक–चेतना एवं भक्ति आंदोलन, विभिन्न काव्यधाराएँ तथा उनका वैशिष्ट्य।
- प्रमुख निर्गुण संत कवि और उनका अवदान।
- भारत में सूफी मत का विकास तथा प्रमुख सूफी कवि और काव्यग्रंथ, सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति एवं लोकजीवन के तत्त्व।
- राम और कृष्ण काव्य, रामकृष्ण काव्येतर काव्य, भक्तीतर काव्य, प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य। भक्तिकालीन गद्य–साहित्य।
- उत्तरमध्यकाल (रीतिकाल) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, काल–सीमा और नामकरण, दरबारी संस्कृति और लक्षण–ग्रंथों की परंपरा, रीतिकाल साहित्य की विभिन्न धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त), प्रवृत्तियाँ और विशेषताएँ, प्रतिनिधि रचनाकार और रचनाएँ। रीतिकालीन गद्य साहित्य।
- आधुनिककाल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सन् 1857 ई. की क्रांति और पुनर्जागरण।
- भारतेन्दु युगः प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यक विशेषताएँ।
- द्विवेदी युग : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ ओर साहित्यिक विशेषताएँ।
- हिन्दी स्वच्छंदतावादी चेतना का अग्रिम विकास–छायावादी काव्य : प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।

- उत्तरछायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ–प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत, समकालीन कविता। प्रमुख साहित्यकार, रचनाएँ और साहित्यिक विशेषताएँ।
- हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि) का विकास।
- हिन्दी आलोचना का उद्‌भव और विकास।
- दक्खिनी हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
- उर्दू साहित्य का संक्षिप्त परिचय।
- हिन्दीतर क्षेत्रों तथा देशान्तर में हिन्दी भाषा और साहित्य।

vad foHkktu&

4	आलोचनात्मक प्रश्न :	4 x 15 = 60
5	लघूत्तरी प्रश्न :	5 x 4 = 20
20	वस्तुनिष्ठ /अति लघूत्तरी प्रश्न	20 x 1 = 20

ipe प्रश्नपत्र– जैन संस्कृति और जीवन मूल्य

bdkÃ&1 tu bfrgkl vkj lLdfr

- जैन धर्म और उसकी प्राचीनता
- कालचक्र
- गवान् ऋष और महावीर
- जैन धर्म के मुख्य सम्प्रदाय
- जैन साहित्य और कला
- जैन संस्कृति की विशेषताएँ

bdkÃ&2 tu vkpkj ehekalk rÏo ehekalk

- जैन आचार का आधार और स्वरूप
- त्रिरत्न (रत्नत्रय)
- श्रमणाचार–श्रावकाचार
- जैन जीवनशैली
- नव तत्त्व
- छः द्रव्य
- लोकवाद

bdkÃ&3 tu n'kZu vkj vk/kfud foKku

- जैन दर्शन में अध्यात्म
- जैन दर्शन में विज्ञान
- जैन दर्शन में मनोविज्ञान
- जैन दर्शन में समाज
- जैन दर्शन में लोकतंत्र
- जैन दर्शन में अर्थशास्त्र
- जैन दर्शन में पर्यावरण
- जैन दर्शन में शाकाहार

bdkÃ&4 thou foKku v©j eY; fodkl

- जीवन विज्ञान शिक्षा का नया आयाम
- जीवन विज्ञान के सात अंग
- जीवन विज्ञान और मूल्य विकास
- अहिंसा और अहिंसा प्रशिक्षण
- अनेकान्त और जीवन व्यवहार
- अणुव्रत आन्दोलन और नैतिकता

bdkÃ&5 Á{kk/;ku v©j ÁcU/ku

- प्रेक्षाध्यान स्वरूप और उद्देश्य
- समय–प्रबन्धन
- लक्ष्य–प्रबन्धन
- स्वास्थ्य–प्रबन्धन
- तनावमुक्ति–प्रबन्धन
- नशामुक्ति–प्रबन्धन
- कशायमुक्ति–प्रबन्धन

vad foHkktu&

1	वस्तुनिष्ठ प्रश्न :	1 x 10 = 10
5	लघूत्तरी प्रश्न :	5 x 6 = 30
3	निबन्धात्मक	3 x 20 = 60

स्नातकोत्तर (एम.ए.) उत्तरार्द्ध

"k"Be प्रश्नपत्र–प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

पाठ्यग्रंथः

- pncjnk;h % पृथ्वीराज रासो, संपा. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. नामवर सिंह (एक समय), शशिव्रता विवाह समय
- dchj % कबीर ग्रंथावली, संपा. डॉ. श्यामसुन्दरदास (विभिन्न अंगों से चयनित 100 साखियाँ तथा 25 पद)
- tk;lh % पद्मावत, संपा. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (2 खण्ड), सिंहल द्वीप, नखशिख वर्णन
- lwjnkl % भ्रमरगीत सार, संपा. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, (50 पद) 21 से71 तक
- rqylhnkl % रामचरित मानस (गीता प्रेस) उत्तरकांड आरम्भ के 50
- fcgkjh yky % बिहारी रत्नाकर संपा. जगन्नाथ दास रत्नाकर, आरम्भ के 50 पद।

nwjr ikB – अमीर खुसरो, मीराबाई, रसखान, भूषण, सेनापति।

vad foHkktu&

3	व्याख्याएं	3 x 10 = 30
2	आलोचनात्मक प्रश्न :	2 x 15 = 30
5	लघूत्तरी प्रश्न	5 x 4 = 20
20	वस्तुनिष्ठ /अति लघूत्तरी प्रश्न	20 x 1= 20

lIre प्रश्नपत्र–भा"kkfoKku ,oa fgUnh Hkk"kk

पाठ्यवि"kय :

(क) भा"kk foKku

- Hkk"kk vkj Hkk"kkfoKku % भाषा की परिभाषा और अभिलक्षण, भाषा–व्यवस्था और भाषा–व्यवहार, भाषा–संरचना और भाषिक–प्रकार्य। भाषाविज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति, अध्ययन की दिशाएँ–वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक।
- Lou ifØ;k % स्वनविज्ञान का स्वरूप और शाखाएँ, वागवयव और उनके कार्य, स्वन की अवधारणा और स्वनों का वर्गीकरण, स्वनगुण, स्वनिक परिवर्तन। स्वनिम विज्ञान का स्वरूप, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद, स्वनिमिक विश्लेषण।
- 0;kdj.k % रूपप्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएँ, रूपिम की अवधारणा और भेद : मुक्त–आबद्ध, अर्थदर्शी और संबंधदर्शी, संबंधदर्शी रूपिम के भेद और प्रकार्य। वाक्य की अवधारणा, अभिहितान्वयवाद और अन्विताभि–धानवाद, वाक्य के भेद, वाक्य–विश्लेषण, निकटस्थ–अवयव विश्लेषण, गहन–संरचना और बाह्य–संरचना।
- vFkZ foKku % अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध, पर्यायता, अनेकार्थता, विलोमता, अर्थ–परिवर्तन।
- lkfgR; vkj Hkk"kk foKku % साहित्य के अध्ययन में भाषा–विज्ञान के अंगों की उपयोगिता।

¼[k½ fgUnh Hkk"kk

- fgUnh dh ,frgkfld i"BHkwfe % प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ–वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। मध्यकालीन भारतीय

आर्यभाषाएँ–पालि, प्राकृत–शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ ।आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएं और उनका वर्गीकरण।

- **fgUnh dk Hkkxksfyd foLrkj** % हिन्दी की उपभाषाएँ, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, बिहारी तथा पहाड़ी और उनकी बोलियाँ। खड़ी बोली, ब्रज और अवधी की विशेषताएँ।
- **fgUnh dk Hkkf"kd Lo:i** % हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था–खंड्य, खंड्येतर। हिन्दी शब्द रचना–उपसर्ग, प्रत्यय, समास। रूपरचना–लिंग, वचन और कारक–व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रियारूप। हिन्दी वाक्य–रचना : पदक्रम और अन्विति।
- **fgUnh ds fofo/k :i** % संपर्क–भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिन्दी, माध्यम–भाषा, संचार–भाषा, हिन्दी की सांविधानिक स्थिति।
- **fgUnh esa dEI;wVj lqfo/kk,¡** % आंकड़ा–संसाधन और शब्द–संसाधन, वर्तनी–शोधक, मशीनी अनुवाद, हिन्दी भाषा–शिक्षण।
- **nsoukxjh fyfi** % विशेषताएँ और मानकीकरण।

vad foHkktu&

भाषा विज्ञान (2 आलोचनात्मक प्रश्न) :	2 x 15 = 30
हिन्दी भाषा (2 आलोचनात्मक प्रश्न) :	2 x 15 = 30
5 लघूत्तरी प्रश्न	5 x 4 = 20
20 वस्तुनिष्ठ ⁄अति लघूत्तरी प्रश्न	20 x 1 = 20

v"Ve प्रश्नपत्र–1. लोकसाहित्य

पाठ्यवि"k;

इस प्रश्नपत्र में सैद्धांतिक अध्ययन के साथ संबंधित क्षेत्र के लोक–साहित्य का गहन अध्ययन अपेक्षित है तथा उससे संबंधित प्रायोगिक कार्य भी।

खण्ड (क)

- लोक और लोक–वार्ता, लोक–वार्ता और लोक–विज्ञान।
- लोक–संस्कृति : अवधारणा, लोक–वार्ता और लोक–संस्कृति, लोक–संस्कृति और साहित्य।
- लोक–साहित्य का अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध।

- भारत में लोक–साहित्य के अध्ययन का इतिहास।
- हिन्दी लोक–साहित्य के विशिष्ट अध्येता। लोक–साहित्य की अध्ययन–प्रक्रिया एवं संकलन की समस्याएँ।
- लोक–साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण –
  लोक–गीत, लोक–नाट्य, लोक–कथा, लोक–गाथा, लोक–संगीत।
  लोक–गीत : संस्कार–गीत, व्रत–गीत, श्रम–गीत, ऋतु–गीत, जाति–गीत।
  लोक –नाट्यः रामलीला, रासलीला, कीर्तनियाँ, स्वांग, यक्षगान, भवाई, विदेसिया, माच, भाँड, तमाशा, नौटंकी, जात्र।
- हिन्दी नाटक और रंगमंच पर लोक नाट्यों का प्रभाव।
- लोक–कथा : व्रत–कथा, परी–कथा, नाग–कथा, बोध–कथा, अभिप्राय (Motives)
- लोक–गाथा : ढोला–मारू, लोरिकायन, बगड़ावत।
- लोक–संगीत : लोकवाद्य
- लोक–भाषा : मुहावरे, कहावतें, पहेलियाँ

[k.M ¼[k½

लोकसाहित्य में जनपदीय भाषा राजस्थानी का अध्ययन

vad foHkktu&

3	आलोचनात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
5	लघूत्तरी प्रश्न	5 x 4 = 20
15	वस्तुनिष्ठ / अति लघूत्तरी प्रश्न	15 x 1 = 15
	प्रायोगिक कार्य (क्षेत्रीय लोक–साहित्य का संकलन)	= 20

v"Ve प्रश्नपत्र–2. हिन्दी उपन्यास

पूर्णांक : 100

पाठ्यवि"k;:

उपन्यास का स्वरूप, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, हिन्दी उपन्यास की प्रमुख षैलियां, हिन्दी के प्रतिनिधि उपन्यासकारों का वस्तुषिल्पगत वैषिष्ट्य। व्याख्या एवं विवेचना के लिए निम्न छः औपन्यासिक कृतियों का अध्ययन करना है–

1. रंगभूमि – प्रेमचंद
2. मृगनयनी–वृंदावनलाल वर्मा

3.	त्यागपत्र – जैनेन्द्र	4.	तमस–भीष्म साहनी
5.	कब तक पुकारूँ–रांगेय राघव	6.	अपने–अपने अजनबी–अज्ञेय

द्रुत पाठ हेतु निम्न पाँच उपन्यासों पर लघूत्तरी प्रश्न पूंछे जाएँगे–

परीक्षा गुरू (लाला श्रीनिवासदास), परती परिकथा (फणीश्वरनाथ रेणु) राग दरबारी (श्रीलाल शुक्ल), चित्रलेखा (भगवतीचरण वर्मा),पहला गिरमिटिया (गिरिराज किशोर)।

vid foHkk tu&

3	व्याख्याएँ	3 x 10 = 30
2	आलोचनात्मक प्रश्न	2 x 15 = 30
5	लघूत्तरी प्रश्न	5 x 4 = 20
20	वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न	20 x 1 = 20

uoe प्रश्नपत्र–1. पत्रकारिता प्रषिक्षण

पाठ्यवि"k;य :

- पत्रकारिता का स्वरूप और प्रमुख प्रकार।
- विष्व पत्रकारिता का उदय। भारत में पत्रकारिता का आरंभ।
- हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास।
- समाचार पत्रकारिता के मूल तत्त्व–समाचार संकलन तथा लेखन के मुख्य आयाम।
- संपादन कला के सामान्य सिद्धान्त– शीर्षकीकरण, पृष्ठ–विन्यास, आमुख और समाचारपत्र की प्रस्तुति–प्रक्रिया।
- समाचार पत्रों के विभिन्न स्तंभों की योजना।
- दृश्य सामग्री (कार्टून, रेखचित्र, ग्रैफिक्स) की व्यवस्था और फोटो पत्रकारिता।
- समाचार के विभिन्न स्रोत।
- सवांददाता की अर्हता, श्रेणी एवं कार्यपद्धति।
- पत्रकारिता से संबंधित लेखन–संपादकीय, फीचर, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, खोजी समाचार, अनुवर्तन (फालोअप) आदि की प्रविधि।
- इलैक्ट्रॉनिक मीडिया की पत्रकारिता–रेडियो, टी.वी. वीडियो, केबल, मल्टी मीडिया और इंटरनेट की पत्रकारिता।
- प्रिंट पत्रकारिता और मुद्रणकला, प्रूफ शोधन, ले आउट तथा पृष्ठ–सज्जा।

- पत्रकारिता का प्रबंधन–प्रशासनिक व्यवस्था, विक्री तथा वितरण व्यवस्था।
- भारतीय संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकार, सूचनाधिकार एवं मानवाधिकार।
- मुक्त प्रेस की अवधारणा।
- लोक–संपर्क तथा विज्ञापन।
- प्रसार भारती तथा सूचना प्रौद्योगिकी।
- प्रेस संबंधी प्रमुख कानून तथा आचार संहिता।
- प्रजातांत्रिक व्यवस्था में चतुर्थ स्तंभ में पत्रकारिता का दायित्व।

vad foHkktu&

3	आलोचनात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
5	लघूत्तरी प्रश्न	5 x 4 = 20
15	वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न	15 x 1 = 15
	पत्रकारिता संबंधी प्रायोगिक कार्य	5 x 4 = 20

uoe प्रश्नपत्र–2. अनुवाद विज्ञान

पाठ्यवि"k;:

- अनुवाद : परिभाषा, क्षेत्र और सीमाएं।
- अनुवाद का स्वरूप : अनुवाद कला, विज्ञान अथवा षिल्प।
- अनुवाद की इकाई : शब्द, पदबंध, वाक्य, पाठ।
- अनुवाद की प्रक्रिया और प्रविधि : विश्लेषण, अंतरण, पुनर्गठन।
  अनुवाद–प्रक्रिया के विभिन्न चरण, स्रोतभाषा के पाठ का विश्लेषण एवं उसके अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया, स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना तथा अर्थान्तरण की प्रक्रिया। अनूदित पाठ का पुनर्गठन और अर्थ–संप्रेषण की प्रक्रिया। अनुवाद–प्रक्रिया की प्रकृति।
- अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धान्त।
- अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार–
  कार्यालयी, वैज्ञानिक वं तकनीकी, साहित्यिक, मानविकी, संचारमाध्यम, विज्ञापन आदि।
- अनुवाद की समस्याएं : सृजनात्मक अथवा साहित्यिक अनुवाद की समस्याएं, कार्यालयी अनुवाद की समस्याएं, वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य के अनुवाद की समस्याएं,विधि–साहित्य के अनुवाद की समस्याएं,

कोश एवं पारिभाषिक शब्दार्थ के निर्माण की समस्याएं, मीडिया क्षेत्र के अनुवाद की समस्याएं, विज्ञापन के अनुवाद की समस्याएं।

- अनुवाद के उपकरण : कोश, पारिभाषिक शब्दावली, थिसारस, कम्प्यूटर आदि।
- अनुवाद : पुनरीक्षण, संपादन, मूल्यांकन।
- मशीनी अनुवाद।
- अनुवाद की सार्थकता, प्रासंगिकता एवं व्यावसायिक परिदृश्य।
- अनुवाद के गुण।
- पाठ की अवधारण और प्रकृति–

पाठ–शब्द प्रति शब्द।	शाब्दिक अनुवाद
भावानुवाद	छायानुवाद
पूर्ण और आंशिक अनुवाद	आशु अनुवाद

व्यावहारिक अनुवाद (प्रश्नपत्र में दिये गए अंग्रेजी अवतरण का हिन्दी अनुवाद)

vad foHkkt u&

3	आलोचनात्मक प्रश्न	3 x 15 = 45
5	लघूत्तरी प्रश्न	5 x 4 = 20
15	वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न	15 x 1 = 15
	व्यावहारिक अनुवाद	= 20

n'ke प्रश्नपत्र–प्रयोजनमूलक हिन्दी

पाठ्यवि"k;

खण्ड (क) : कामकाजी हिन्दी

- हिन्दी के विभिन्न रूप–सर्जनात्मक भाषा, संचार भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा।
- कार्यालयी हिन्दी (राजभाषा) के प्रमुख प्रकार्य : प्रारूपण, पत्र लेखन, संक्षेपण, पल्लवन, टिप्पण।
- पारिभाषिक शब्दावली– स्वरूप एवं महत्व, पारिभाषिक शब्दावली– निर्माण के सिद्धान्त।
- ज्ञान विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली (निर्धारित शब्द)

fgUnh dEI;fVx

- कंप्यूटर : परिचय, रूपरेखा, उपयोग तथा क्षेत्र वेब पब्लिषिंग का परिचय।
- इंटरनेट संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख–रखाव एवं इंटरनेट समय मितव्ययिता के सूत्र
- वेब पब्लिशिंग
- इंटर एक्सप्लोइट अथवा नेटस्केप
- लिंक, ब्राउजिंग, ई मेल भेजना/प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग व अपलोडिंग, हिन्दी सॉफ्टवेयर, पैकेज।

[k.M ¼[k½ i=dkfjrk

- पत्रकारिता : स्वरूप एवं विभिन्न प्रकार
- हिन्दी पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास
- समचार लेखन कला
- संपादन के आधारभूत तत्त्व
- व्यावहारिक प्रूफ शोधन
- शीर्षक की संरचना, लीड, इंट्रो एवं शीर्षक – संपादन
- संपादकीय –लेखन
- पृष्ठ–सज्जा
- साक्षात्कार, पत्रकार वार्ता एवं प्रेस प्रबंधन
- प्रमुख प्रेस कानून एवं आचार संहिता

[k.M ¼x½ eh fM;k y[ku

- जनसंचार : प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियां
- विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप–मुद्रण, श्रव्य, दृश्य–श्रव्य, इंटरनेट।
- श्रव्य माध्यम (रेडियो)
  मौखिक भाषा की प्रकृति। समाचार–लेखन एवं वाचन। रेडियो नाटक। उद्घोषणा लेखन। विज्ञापन लेखन। फीचर तथा रिपोर्ताज।
- दृश्य–श्रव्य माध्यम (फिल्म, टेलीविजन एवं वीडियो)
  दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति। दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य । पार्श्व वाचन (वायस ओवर)। पटकथा लेखन। टेली–ड्रामा/डाक्यू ड्रामा, संवाद लेखन। साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण। विज्ञापन की भाषा।

- इंटरनेट : सामग्री सृजन (Content Creation)

[k.M ¼?k½ % vuqokn % fl)kUr ,oa 0;ogkj

- अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि
- हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका
- कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद
- जनसंचार माध्यमों में अनुवाद
- विज्ञापन में अनुवाद
- वैचारिक–साहित्य का अनुवाद
- वाणिज्यिक– अनुवाद
- वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्यौगिकी क्षेत्रों में अनुवाद
- विधि–साहित्य की हिन्दी और अनुवाद
- व्यावहारिक–अनुवाद–अभ्यास
- कार्यालयी अनुवाद : कार्यालयी एवं प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक प्रयुक्तियां, पदनाम, विभाग आदि।
- पत्रों के अनुवाद
- पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों, प्रतिवेदनों के अनुवाद
- बैंक–साहित्य के अनुवाद का अभ्यास
- विधि–साहित्य के अनुवाद का अभ्यास
- साहित्यिक–अनुवाद के सिद्धान्त एवं व्यवहार : कविता, कहानी, नाटक।
- सारानुवाद
- दुभाशिया प्रविधि
- अनुवाद पुनरीक्षण एवं मूल्यांकन

vad foHkktu&

4	आलोचनात्मक प्रश्न (प्रत्येक खण्ड से एक–एक)	4 x 15 = 60
5	लघूत्तरी प्रश्न	5 x 4 = 20
20	वस्तुनिष्ठ/अति लघूत्तरी प्रश्न	20 x 1 = 20

tSu fo'oHkkjrh laLFkku

लाडनूं-341 306 (राजस्थान)

Jain Vishva Bharati Institute

LADNUN-341 306 (Rajasthan)

दूरस्थ शिक्षा प्रोग्राम

(Distance Education Programme)

f}o"kh; ikB~;Øe

SYLLABUS (Two Years)

Lukrdksùkj ¼,e-,-½ ikB~;Øe

fgUnh

संस्करण-2015 **Edition - 2015**